RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015–17

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्षः 76, अंक : 7 एक प्रति 2 : रुपये

कुल पृष्ठ : 8

रविवार 19 मई, 2019

विक्रमी सम्वत् 2076, सृष्टि सम्वत् 1960853120

दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये

आजीवन शुल्क : 1000 रुपये

दूरभाष : 0181-2292926, 5062726

E-mail: apspunjab2010@gmail.com,

www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष–76, अंक : 7, 16–19 मई 2019 तदनुसार 5 ज्येष्ठ, सम्वत् 2076 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

दो मार्ग

ले०–स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

द्वे स्रुती अशृणवं पितृणामहं देवानामुत मर्त्यानाम्।
ताभ्यामिदं विश्वमेजत्समेति यदन्तरा पितरं मातरं च।।

–ऋ० १०।८८।१५

शब्दार्थ–अहम्: = मैं **पितृणाम्** = पितरों, **देवानाम्** = देवों **उत** = और **मर्त्यानाम्** = मरणधर्माओं के **द्वे** = दो **स्रुती** = मार्ग **अशृणवम्** = सुनता हूँ। **ताभ्याम्** = उन दोनों से **इदम्** = यह **विश्वम्** = जगत् **एजत्** = गति करता हुआ **समेति** = आ–जा रहा है और **यत्** = जो **पितरम्+मातरं+च** = माता–पिता के **अन्तरा** = सम्बन्ध से है।

व्याख्या–मनुष्यों में सकाम और निष्काम दो भेद हो सकते हैं। निष्काम मनुष्यों को देव कहते हैं। **'अकामा विश्वे वो देवाः शिक्षन्तो नोप शेकिम'** [अथर्व० ६।११४।३]=हम अकाम, कामनारहित देव तुम्हें शिक्षा देते हुए भी नहीं कर सके। निष्काम मनुष्यों=देवों का मार्ग देवयान होता है। शतपथब्राह्मण में लिखा है–**'सत्यं वै देवाः'** = देव सर्वथा सत्य होते हैं। अतएव–**'सत्येन पन्था विततो देवयानः, येनाक्रमन्त्यृषयो ह्याप्तकामाः'** = देवयान=देवों के जाने का मार्ग सत्य से विस्तृत है, इस मार्ग से आप्तकाम ऋषि चलते हैं। देवयान का फल मोक्ष है। दूसरा मार्ग पितृयान है। जिस मार्ग से चलने पर मनुष्य पिता बनता है। पिता बनने का अभिप्राय है जन्म–मरण के चक्कर में आते रहना। सारा संसार इन्हीं दो मार्गों से चल रहा है। मुण्डकोपनिषत् [१।२।१०–११] में इन दो गतियों का साङ्केतिक वर्णन है–

इष्टापूर्त्तं मन्यमाना वरिष्ठं नान्यच्छ्रेयो वेदयन्ते प्रमूढाः।
नाकस्य पृष्ठे ते सुकृतेऽनुभूत्वेमं लोकं हीनतरं वा विशन्ति।।
तपः श्रद्धे ये ह्युपवसन्त्यरण्ये शान्ता विद्वांसो भैक्षचर्यां चरन्तः।
सूर्यद्वारेण ते विरजाः प्रयान्ति यत्रामृतः स पुरुषो ह्यव्ययात्मा।।

इष्ट और पूर्त्त को ही सबसे बढ़िया मानने वाले अतिमूढ़जन उससे अतिरिक्त श्रेयः = कल्याण को नहीं जानते। वे अपने कर्म से जन्य सुखावस्था का अनुभव करके हीनतर दशा को प्राप्त होते हैं, किन्तु जो शान्त विद्वान् संन्यासी होकर वन में रहते हुए तप और श्रद्धा का अनुष्ठान करते हैं, वे निष्पाप महात्मा सूर्यद्वार से वहाँ पहुँचते हैं जहाँ वह अविनाशी, अविकारी पूर्ण पुरुष है। सांसारिक सुखसमृद्धि के साधनों को इष्टापूर्त्त कहते हैं। जो केवल शरीरसुख को ही सब–कुछ मानते हैं, मोक्ष का जिन्हें विचार तक नहीं आता, वे यदि सत्कर्मी हैं, तो अपने उन सत्कर्म्मों का फल सुख इस जन्म या दूसरे जन्म में भोगकर फिर हीन–अवस्था में आते हैं, क्योंकि सुखदायक उपाय अपना फल दे चुके होते हैं। इसके विपरीत विषयभोग में दोषदर्शन के द्वारा विरक्त, चञ्चलतारहित होकर मोहमाया के बन्धनों को जो काट चुके हैं, वे महापुरुष श्रद्धापूर्वक तप में लग जाते हैं, और परम पुरुष को प्राप्त कर परमानन्द को प्राप्त करते हैं। पहला मार्ग पितृयान है, दूसरा देवयान है। उपनिषदों में इन दोनों मार्गों का विस्तृत उल्लेख है।

(स्वाध्याय संदोह से साभार)

पुरुष एवेदꣳसर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति।।

–यजु० ३१.२

भावार्थ–हे मनुष्यो! जब–जब इस जगत् की रचना हुई तब–तब उस समर्थ प्रभु ने ही इस जगत् को रचा, वही सदा इसका पालन–पोषण और धारण करता रहा, अब कर रहा है, आगे भविष्य में भी इसकी रचना पालन–पोषण धारण करना आदि काम करता रहेगा। और मुक्ति सुख भी उसी जगन्नियन्ता परमात्मा के अधीन है। वही प्रभु, अपने प्यारे, अपने जीवन को पवित्र वेदानुसार पवित्र बनाने वाले ज्ञानी भक्तों को मुक्ति देकर सदा सुखी रखता है।

एतावानस्य महिमाऽतो ज्यायांश्च पूरुषः।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।।

–यजु० ३१.३

भावार्थ–यह भूत भौतिक सब संसार इस जगत्पति की महिमा हैं। उस प्रभु ने ही सारे जगत् को अपनी शक्ति से रचा और वही इसका पालन पोषण कर रहा है। इस जगत् से वह बहुत ही बड़ा है, सारे चराचर जगत् के सब भूत इस प्रभु के एक अंश में पड़े हैं। उस जगदीश के तीन पाद स्व स्वरूप में वर्त्तमान हैं। वही अविनाशी प्रकाशस्वरूप और सदा मुक्तस्वरूप है। कभी बन्धन में नहीं आता, और अपने भक्तों के सकल बन्धनों को काट कर उनको मुक्ति प्रदान करता है।

त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि।।

–यजु० ३१.४

भावार्थ–परमात्मा कार्य जगत् से पृथक् तीन अंशों से प्रकाशित हुआ, एक अंश अपने सामर्थ्य से सब जगत् को बार–बार उत्पन्न करता है, पश्चात् उस चराचर जगत् में व्याप्त होकर स्थित है। इन मन्त्रों में परमात्मा के जो चार पाद वर्णन किये हैं, यह एक उपदेश करने का ढंग है। उस निराकार प्रभु के वास्तव में न कोई हस्त है न पाद। पुनः इस कथन का कि, वही प्रभु एक अंश से जगत् को उत्पन्न करता है, तीन अंशों में पृथक् रहता है, भाव यह है कि सारे जगत् से प्रभु बहुत बड़ा है, जगत् बहुत ही अल्प है। अनन्त ब्रह्माण्डों को रचा हुआ भी इन से पृथक् है और बहुत बड़ा है।

स्वामी दयानन्द महर्षि अरविन्द की दृष्टि में

ले.-डा. सीताराम सहगल

स्वामी दयानन्द सरस्वती का जन्म १८२४ में हुआ; तब देश नई करवट ले रहा था। १८५७ में स्वतन्त्रता की लड़ाई में उनके गुरु विरजानन्द ने भी उसमें भाग लिया था। अंग्रेज़ी शासन की पहली राजधानी कलकत्ता थी। बंगाल के नेताओं को प्रशासन के हर विभाग में काम करने का अवसर मिला। मैकाले ने शिक्षा के माध्यम को अंग्रेज़ी बनाकर हमेशा के लिए देश की भाषाओं का गला घोंट दिया। लोगों का एक वर्ग जो केवल रक्त और रंग में ही भारतीय था, परन्तु रुचि, राय, नैतिकता तथा बुद्धि में अंग्रेज़ों का गुलाम बनने लगा। अंग्रेज़ी पढ़े-लिखे व्यक्ति प्रशासन के काम में आगे बढ़े और उन्होंने अपने देश की संस्कृति का उपहास करना शुरू कर दिया। मैकाले कलकत्ता राजधानी में पांच वर्ष रहा, परन्तु उसे भारत में सर विलियम जोन्स, सर विल्किन्स तथा कोलब्रुक की तरह आदर, शिक्षा और अनुकरण के योग्य कुछ तत्त्व मालूम नहीं पड़ा। अंग्रेज़ी-साहित्य का लेखक किपलिङ्ग शिमला में रहा, और मेम-साहिबों के बारे में किस्से कहानियां लिखता रहा। इसी तरह अंग्रेज़ी उपन्यासकार टैलर अपने तारा (Tara) उपन्यास में भगवद्गीता के आख्यान को रामायण का अङ्ग और राम तथा लक्ष्मण को महाभारत के सुप्रसिद्ध पात्र कहने में भारतीयता के प्रति अपने घोर अज्ञान का परिचय देता रहा।

इस विषैले संक्रामक वातावरण से देश को बचाने के लिए उस समय कुछ व्यक्ति समाज में आगे बढ़े, जिन्होंने भारतीय विचार पर गर्व और गौरव की भावना को बनाये रखा। वे दृढ़ता, आशा और बलिदान की भावना के स्रोत थे। बंकिम चन्द्र चैटर्जी ने बंगाल में, न्यायमूर्ति महादेव गोविन्द रानाडे ने महाराष्ट्र में तथा दयानन्द सरस्वती ने पंजाब में मृत भारत को वेदों का अमृत पिलाकर अमर बनाया। दयानन्द सरस्वती जन्म से गुजराती थे, परन्तु कर्म से पंजाबी थे। पंजाब ने उनके सन्देश को आत्मसात् करके सारे भारत में वेदों का शंखनाद किया। दयानन्द स्कूल कालेज खोले गये। दयानन्द के शिष्य आचार्य विश्वबन्धु शास्त्री ने वेदों पर जो काम किया, उसका सानी संसार में नहीं है। विश्व के पुस्तकालयों में 'वैदिक-पदानुक्रमकोष' की जिल्दों को आदर प्राप्त हो चुका है। क्या यह महर्षि दयानन्द की कृपा की पूर्ण देन नहीं है?

महर्षि अरविन्द ने अपने प्रेरक शब्दों में स्वामी दयानन्द के बारे में भविष्यवाणी की थी-

''जब मैं दयानन्द-विषयक अपनी भावना को वर्णन करने का यत्न करता हूँ और उनकी मुझ पर जो छाप पड़ी है उसे ठीक-ठीक रूप देने की चेष्टा करता हूँ, तो इस पुरुष के-उसके जीवन के और कार्य के उन दो महान् गुणों से प्रारम्भ करता हुआ अपने को पाता हूँ, जो विशेष गुण इन्हें अपने समकालीन साथियों से स्पष्ट अलग करते हैं। अन्य महान् भारतीयों ने जाति के आध्यात्मिक उपादान में अपने-आप को एक प्रकार से उंडेल कर आज के भारत के बनाने में सहायता दी है, उन्होंने एक चलायमान और अनिर्धारित द्रव्य में अपने आपका आध्यात्मिक निषेचन किया, जो द्रव्य एक दिन स्थिरता में आएगा और प्रकृति के एक महान् दृश्य जन्म के रूप में प्रकट होगा। उन्होंने एक प्रकार का जामन दे दिया, आकार रहित हलचल और संक्षोभ की एक शक्ति दी, जिसमें आकारों का प्रकट होना आवश्यक था। वे स्मरण किए जाएंगे ऐसी महान् आत्माओं और महान् प्रभावों के रूप में, जो भारत की आत्मा में निवास करते हैं। वे हमारे अन्दर हैं और उनके बिना निसन्देह हम वह न होते जो कि हम आज हैं। परन्तु ठीक-ठाक आकार को लेकर यह नहीं कहा जा सकता कि यह है जो उस मनुष्य को अभिप्रेत था, यह कह सकना तो दूर रहा कि वह आकार है जो कि उस आत्मा का ही ठीक मूर्त्त रूप है।

बंगाल में राजा राममोहन राय ने अपना वरद हाथ रखा-जो बंगाल सरिताओं और धान के खेतों के पास सोया पड़ा था-उसे उसकी लम्बी सुस्ती की नींद से हिलाकर महान् ध्येय तक पहुँचा दिया। वे उपनिषदों पर ही ठहर गए। परन्तु स्वामी दयानन्द ने उसे दूर तक देखा और पहचाना कि हमारा वास्तविक मूलभूत बीज 'वेद' है। वे राष्ट्रीय सहजज्ञान शक्ति और उसे आलोकित करने में अन्तर्दृष्टि की शक्ति के महान् धनी थे। सोई हुई जाति के स्वाभिमान को जगाने में वे समर्थ हुए।

श्री अरविन्द के शब्दों में राष्ट्रीय होने का अभिप्राय एक स्थान पर रुक जाना नहीं है। बल्कि, भूत की सञ्जीवनी शक्ति को ग्रहण करके उसे वर्तमान जीवन की धारा में डाल देना ही वास्तव में पुनरुद्धार और नवनिर्माण का सब से अधिक शक्तिशाली उपाय है। दयानन्द का कार्य वर्तमान साँचे में जीवन भरने के लिए भूत के इस प्रकार के तत्त्व और भावना को फिर से लाता है। और देखो, जैसे जीवन में वैसे ही अपने कार्य में उसने उस भूतको ग्रहण किया हुआ है, जो निर्मल शक्ति के प्रथम प्रवाह के रूप में अपने आदिम स्रोतों से सीधा आने के कारण पवित्र है, अपने मूलभूत नियम और अतएव किसी शाश्वत और हमेशा नवीन किये जा सकने योग्य सत्त्व के समीप है।

सत्य एक सरल सी वस्तु लगती है, फिर भी अत्यन्त कठिन है। सत्य ही वैदिक शिक्षा का मूलमन्त्र था, आत्मा में सत्य, दृष्टि में सत्य, इरादे में सत्य और क्रिया में सत्य, क्रियात्मक सत्य। आर्यत्व-एक आन्तरिक निष्कपटता और दृढ़ सत्यहृदयता, स्पष्टता और वाणी तथा कर्म में स्फुट उदात्तता, यह सब कुछ प्राचीन आर्य नैतिकता में स्वभाव-निहित था। प्रकृति से दूर रहना मृत्यु के समीप पहुँचना है। प्रकृति के पास रहना ही 'दिवस्पुत्र' का औरसत्व है। यही वह छाप थी जिसे महर्षि ने अपने पीछे जलती हुई मशाल की तरह छोड़ा।

श्री दयानन्द ने वेद को डंके की चोट से अपनी आधारभूत दृढ़ चट्टान के रूप में अपनाया। उन्होंने कर्मकाण्ड के अर्धधार्मिक तथा अर्धजादूभरे अर्थों से जनता को दिव्यज्ञान का सन्देश दिया। यही बात उपनिषदों में बतलाई गई है, महर्षि ने उसे ईश्वरीय ज्ञान का स्रोत कहा है जो ज्ञानमार्ग का दूसरा नाम है। वेद की किसी व्याख्या की सफलता या विफलता इस बात पर निर्भर करती है कि उस में वेदप्रतिपादित धर्म का केन्द्रिय विचार क्या है और स्वयं वेद की अपनी अन्त साक्षी उस विचार की कितनी मात्रा तक पुष्टि करती है, वेद की ऋचाओं में एक ही परम देव के गीत गाए गए हैं अनेक नामों द्वारा, ऐसे अनेक नामों द्वारा जो कि प्रयुक्त किए गए हैं और इसी अभिप्राय और उद्देश्य से सोच-विचार कर प्रयुक्त किए गए हैं कि उस एक देव के भिन्न-भिन्न गुणों तथा शक्तियों का वर्णन करें। वेद में स्पष्ट लिखा हैं-

एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्त्य्,
अग्निं यमं मातरिश्वानमाहु:।

(ऋग्वेद १,१६४,४६)

(एकं सत्) एकही सत् को (विप्रा:) विप्र स्त्रोत (ज्ञान-धनी, द्रष्टा, ऋषिलोग), (बहुधा वदन्ति) अनेक प्रकार से बोलते हैं। (अग्निं यमं मातरिश्वानम् आहु:) अग्नि नाम से पुकारते हैं, यमनाम से पुकारते हैं, मातरिश्वा नाम से पुकारते हैं। इस ऋचा के पूर्वभाग में कहा है कि इन्द्र, मित्र, वरुण, गरुत्मान् भी वही कहाता है।

महर्षि के कहने का मन्तव्य यह है कि देवताओं के नाम एक परमदेव के गुणों को बताने वाले हैं और ये गुण ही हैं जिनकी ऋषिलोग पूजा करते थे। वेदों में नैतिक और आचार-सम्बन्धी तत्त्व विद्यमान हैं, उन्हें पाना ही ईश्वर के नियमों को समझना है। इन्हीं से ईश्वर जगत् पर शासन करता है। इसी रहस्य को ऋषि ने अपने भाष्यों द्वारा लोगों को उनकी सरल-भाषा में समझाया है।

आर्यसमाज की धारा से देश में अपने को अनेक नेताओं ने पवित्र किया, प्रेरणा प्राप्त की और 'अमृतस्य पुत्रा:' बने। इनमें राष्ट्रनिर्माता पंजाबकेसरी लाला लाजपत राय थे। उन्होंने स्वयं लिखा है-

''स्वामी दयानन्द मेरे गुरु हैं, मैंने संसार में केवल उन्हीं को अपना गुरु माना है, वे मेरे धर्म के पिता हैं और आर्य समाज मेरी धर्म-माता है। इन दोनों की गोद में मैं पला। मुझे इस बात का गर्व है कि मेरे गुरु ने मुझे स्वन्त्रतापूर्वक विचार करना, बोलना और कर्तव्य-पालन करना सिखाया तथा मेरी माता ने मुझे एक संस्था में बद्ध होकर नियमानुवर्तिता का पाठ दिया।''

सम्पादकीय

वेदों में राष्ट्र रक्षा के साधन

अथर्ववेद के १२ वें काण्ड़ सूक्त संख्या १ में मातृभूमि के विषय में गहन चिन्तन किया गया है। इस सूक्त के प्रथम मन्त्र में राष्ट्र की रक्षा के आठ उपायों का वर्णन किया गया है-

सत्यं बृहत् ऋतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति।
सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरूं लोकं पृथिवी नः कृणोतु।।

अर्थात् सत्य, बृहत्-महत्वाकांक्षा, ऋत, उग्रता, तेजस्विता, दीक्षा, तप, ज्ञान-विज्ञान और यज्ञ पृथिवी को राष्ट्र को धारण करते हैं। हमारे अतीत, वर्तमान तथा भविष्य की रक्षक, स्वराष्ट्र, हमारी विशाल मातृभूमि हमारे लिए स्थान तथा प्रकाश की व्यवस्था करें।-

जो वस्तु जैसी हो, उसे वैसा जान कर वैसा मानना, बोलना तथा सत्य का व्यवहार करना सत्य कहलाता है। अर्थात् वस्तु का यथार्थ स्वरूप समझ कर तदनुसार व्यवहार ही सत्य है। शास्त्रों में सत्य के ऊपर बहुत बल दिया गया है।- मनुस्मृति में धर्म के दस लक्षणों में सत्य को स्थान दिया गया है-

धृति क्षमा दमोऽस्तयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्।।

राष्ट्र के स्वरूप पर जरा सा विचार करें तो आपको स्पष्ट प्रतीत होगा कि यह सम्पूर्ण राष्ट्र एक विशाल परिवार ही है। राष्ट्र की मूल ईकाई गृहस्थ है। अनेक गृहस्थों के समुदाय को एक बिरादरी या वंश कहा जाता है। उसी से समाज और राष्ट्र का निर्माण होता है। इसलिए मन्त्र में वर्णित सभी तत्व राष्ट्र के हर नागरिक में होने चाहिए। राष्ट्र रक्षा के लिए केवल सत्य ही पर्याप्त नहीं है। सत्यप्रसार के लिए बल भी चाहिए। अतः मन्त्र में सत्य के साथ बृहत् पद का प्रयोग हुआ है। बृहत् का अर्थ है बड़ा। वेदों में मनुष्य को सदैव ऊँचा उठने के लिए कहा गया है। मनुष्य ही दुष्ट प्राणियों की दुष्टता का नाश कर सज्जनता का प्रसार एवं प्रचार कर सकता है। वहीं शस्त्रास्त्रों का निर्माण कर उनके द्वारा दुष्टों, समाज एवं राष्ट्रविरोधियों का संहार कर सकता है। अथर्ववेद में मनुष्य को आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हुए ओजस्वी शब्दों में कहा गया है-

उत्क्रामातः पुरूषमावपत्था मृत्योः षड्वीशमवमुञ्चमानः।
माच्छित्था अस्माल्लोकादग्नेः सूर्यस्य सन्दृशः।। अ.८/१/४

अर्थात् हे पुरूष! इस स्थान-स्थिति-अवस्था से आगे बढ़, नीचे मत गिर। एक बार मृत्यु को भी पछाड़ दे। सूर्य और अग्नि के दर्शन कराने वाले इस लोक से मेरा सम्बन्ध न टूटे।

कितनी प्रबल प्रेरणा है आगे बढ़ने की। वेद वर्तमान स्थिति पर सन्तुष्ट रहने का उपदेश न देकर उस से आगे बढ़ने का उपदेश कर रहा है। राष्ट्र सेवा करने वाले के प्रति वेद का उपदेश है कि-

ऊर्जे त्वा बलाय त्वा त्वौजसे सहसे त्वा।
अभिभूयाय त्वा राष्ट्रभृत्याय पर्यूहामि शतशारदाय।। अ. १९/३७/३ अर्थात् जीवन के लिए, बल के लिए, ओज के लिए, सामर्थ्य के लिए, शत्रुओं को दबाने के लिए और सम्पूर्ण आयु राष्ट्रपालन के लिए आदेश करता हूं, प्रेरित करता हूं।

वेदों के उपदेश अत्यन्त स्पष्ट होते हैं। राष्ट्रपालन दीन-हीन क्षीण लोगों का कार्य नहीं अपितु वह तो प्रबल शक्तिसम्पन्नों, तेजस्वियों, महौजस्वियों का कार्य है। अतः राष्ट्र के लिए महान् बनना अनिवार्य है। राष्ट्र एवं समाज की रक्षा के लिए मनुष्य में मन्यु-विचारपूर्वक क्रोध का होना अनिवार्य है। जब मनुष्य में समाजद्रोही के प्रति मन्यु नहीं होगा तो उसके निवारण के लिए प्रयत्न ही कैसे करेगा? अतः कुरीतियों, व्यसनों, समाज, राष्ट्र तथा मानवता के विरोधी भावों एवं साधनों के प्रति मनुष्य में क्रोध का होना अत्यन्त आवश्यक है। इस भाव को लक्ष्य में रखकर वैदिक वीर कहता है-

संसृष्टं धनमुभयं समाकृतमस्मभ्यं धत्तां वरूणश्च मन्युः।
भियो दधाना हृदयेषु शत्रवः पराजितासो अप निलयन्ताम्।। अ. ४/३१/७ अर्थात् धन एवं मृत्यु को जोड़ लिया गया है, इनको एक कोटि का समझकर वरूण-श्रेष्ठभाव एवं मन्यु-पाप के प्रति क्रोध-भाव ने हमारे लिए इनको धारण कराया है। शत्रु हमारे इन भावों से हृदय में भयभीत होकर हार की मार खाकर छिप जायें-

यदि राष्ट्र विरोधियों को पराजित कर लिया जाए तो राष्ट्ररूपी संपत्ति धन है। यदि दुर्बलता या किसी अन्य कारण से हम हार गए तो वहीं मृत्यु है। हमारी हार न हो इसलिए हमने श्रेष्ठभाव-समाज एवं राष्ट्र की रक्षा के भाव तथा राष्ट्रद्रोहियों के प्रति क्रोध को धारण किया है। हमारा क्रोध इतना प्रचण्ड होना चाहिए कि शत्रुओं को हारने, भागने, विलीन होने के अतिरिक्त और कोई उपाय ही न सूझे। वेद की इन शिक्षाओं को धारण करने वाला मनुष्य ही कह सकता है कि-

मयिक्षत्रं पर्णमणे मयि धारयताद्रयिम्।
अहंराष्ट्रस्यांभीवर्गे निजो भूयासमुत्तमः।। अ.३/५/२

अर्थात् मुझमें क्षत्रशक्ति तथा पीड़ित की रक्षणशक्ति हैं। वह शक्ति मुझ में धन सम्पत्ति को धारण करा रही है। इस क्षत्र शक्ति के कारण मैं राष्ट्र के अभिवर्ग में अपना होकर उत्तम बन सकूंगा।

जो मनुष्य वेद की इन शिक्षाओं को अपने जीवन में धारण कर लेता है, वह भगवान से प्रार्थना करता है कि मैं अपने जैसों का शिरोमणि और केन्द्र बनूं। सभी साथी मेरा अनुवर्तन करें। कोई भी मनुष्य, चाहे वह कितना ही बड़ा क्यों न हो, सर्वगुणसम्पन्न नहीं हो सकता। कोई किसी गुण में उत्कर्ष प्राप्त करेगा, तो कोई किसी अन्य में श्रेष्ठ बनेगा। अपने इन श्रेष्ठ गुणों के कारण वे सब शिरोमणि बन कर एक दूसरे का हित साधन करेंगे। वेदों के भावों को मनसा, वाचा, कर्मणा जीवन में धारण करने वाला वीर पुरूष पूर्णरूप से निर्भर होकर कह सकता है-:

अयुतोऽहमयुतो म आत्मायुतं मे चक्षुरयुतं मे श्रोतमयुतो मे प्राणाऽयुतो मेऽपानोयुतो मे व्यानोऽयुतोऽहं सर्वः।। अ.१९/५१/५४

मैं अयुत-दस सहस्र के तुल्य हूं। मेरा आत्मा, शरीर, मन भी अयुत हैं। मेरी आँख अयुत है, मेरा कान अयुत है, मेरा प्राण अयुत है, मेरा अपान अयुत है, मेरा व्यान अयुत है।

जिस वीर के हृदय में उमंग भावना कार्य कर रही हो, वह पूर्ण **विश्वास के साथ कह सकता है कि-**

अहमस्मि सहमान उत्तरा नाम भूम्याम्।
अभिषाडस्मि विश्वाषाडाशामाशां विषासहिः।। अ.१२/१/५४
अश्व इव रजो दुधुवे वितान् जनान्।
य आक्षियन् पृथिवीं यादजायत्।। अ. १२/११/५७

मैं सर्वश्रेष्ठ होकर पृथिवी में राष्ट्र में शत्रु विरोध को सहन करने में समर्थ हूं। मैं सम्मुख जाकर शत्रु मर्षण कर सकता हूं। मैं विश्वाषाट्-सर्वसह हूं। प्रत्येक दिशा में मैं विशेष रूप से निरन्तर शत्रुमर्षक हूं। जिस प्रकार घोड़ा धूली को झाड़ देता है, उसी प्रकार मैं उन सब जनों को कपां देता हूं जो हमारी न्याय प्राप्त इस पृथिवी-राष्ट्रसंपति को क्षीण करते हैं।

जब तक प्रत्येक राष्ट्रवासी, राष्ट्रहित चिंतक के हृदय में ऐसे ओजस्वी भाव उत्पन्न नहीं होते, तब तक राष्ट्र की रक्षा हो ही नहीं सकती। इसके लिए आवश्यक है कि प्रत्येक राष्ट्रवासी के हृदय में राष्ट्र के प्रति ममता की भावना जागृत की जाए। क्योंकि पराए पदार्थ के लिए साधारणतया लोग चिन्ता नहीं किया करते। अपने पदार्थ की रक्षा के लिए मनुष्य सर्वदा तत्पर रहा करते हैं। मनुष्य में राष्ट्र के प्रति ममता का भाव उत्पन्न करना ही पर्याप्त नहीं है प्रत्युत उसमें यह भावना उत्पन्न करनी चाहिए कि वह समर्थ है, प्रबल है, शक्तिशाली है। वह कह सके कि- जैसे यज्ञ सबको दबाने वाला है, जैसे अग्नि सबको दबाने वाला है, जैसे चन्द्र अथवा सर्वोत्तम औषधि सब रोगों को दबाने वाला है, जैसे सूर्य अपने तेज से सबको दबाने वाला है, ऐसे ही मैं भी सब उपद्रवियों का अभिभव कर सकूं अर्थात् उन्हें दबा सकूं।

यजुर्वेद में परमात्मा से राष्ट्र की उन्नति की कामना करते हुए भक्त कहता है कि-

आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम्। आ राष्ट्रे राजन्यो शूरइषव्योऽतिव्याधी महारथो जायताम्। दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम्। निकामे-निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्। य. २२/२२

हे सबसे महान् भगवान् हमारे राष्ट्र में ब्रह्म तेज से युक्त ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित, ज्ञान-विज्ञान के भण्ड़ार सदाचारी ब्राह्मण हों। शस्त्रास्त्र के संचालन में अद्भुत चतुर सैनिक शिक्षा से पूर्ण सुशिक्षित दुष्टों को दण्ड़ देने में महाबली क्षात्र तेज को भली प्रकार धारण किए हुए महान् शूरवीर पराक्रमी हमारे बल अद्वितीय योद्धा, क्षत्रिय हों। अमोघ धाराओं में दूध देने वाली गौवें, भार ढ़ोने में योग्य शक्तिशाली उत्तम बैल, बड़ी ही उत्तम द्रुतगति वाले घोड़े, सुयोग्य बुद्धि और सुमति से युक्त सदाचारी नारियां, समय-समय पर वर्षा करने वाले बादल, उत्तम औषध रूप गुणदायक वनस्पतियाँ अन्नादि फल और फूल और फिर इन सबके उत्तम रूप से होने पर सम्पूर्ण राष्ट्र का योगक्षेम हो।

प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

महर्षि दयानन्द जी सरस्वती का शूद्रों के साथ महान उपकार

ले.-डा. शिवपूजनसिंह कुशवाह

(गतांक से आगे)

कनखल भी लिखते हैं-

एवं श्री रामानुजाचार्य-सम्प्रदायेऽपि 'पल्ली' संज्ञकस्य शूद्रस्य कुले जातः शठकोषः, सच गुणकर्मभ्यामेव ब्राह्मण्यमधिगत्य श्रीवैष्णसंप्रदायस्य परमाचार्यः संवृत इति दिव्यसूरिचरित्रचतुर्थसर्गोक्त वचनैरेतत् विदितं भवति। 'श्रेष्ठ श्रीवैष्णवाचार्य्यः 'शठकोपोऽन्त्य-जात्मजः। जन्मकर्म-विशुद्धानां ब्राह्मणानामभूद् गुरुः।'

अर्थात्-"श्री रामानुजाचार्य-सम्प्रदाय में भी 'पल्ली' नाम के शूद्र के कुल में उत्पन्न शठकोप गुण, कर्म से श्री वैष्णव सम्प्रदाय के परमाचार्य हुए, यह 'दिव्यसूरिचरित्र' के चतुर्थसर्ग के वचन से विदित होता है। श्रेष्ठ श्रीवैष्णवाचार्य 'शठकोप' अन्त्यज-उत्पन्न थे। वे जन्म-कर्म से विशुद्ध ब्राह्मणों के भी गुरु हुए।"

आद्य शङ्कराचार्य जी महाराज के अनुयायी उपर्युक्त महामण्डलेश्वर जी ने तो श्री आद्य शङ्कराचार्य जी महाराज के वेदान्तदर्शन १,३,३८ के भाष्य पर भी टीका-टिप्पणी करते हुए लिखा है-

"साक्षाद्वेदविरुद्धत्वात्, स्मृतिष्वेतादृशं वचः।
प्रक्षिप्तं स्यान्नृशंसैस्तु स्वार्थान्धैर्जनशत्रुभिः।"

अर्थात्-"(शूद्रों का जिह्वाच्छेदन आदि की आलोचना करते हुए लिखते हैं कि) ऐसा स्मृतिवचन तो साक्षात् वेद-विरुद्ध है, प्रक्षिप्त हैं।"

इन्होंने स्वयं भी श्री आद्य शङ्कराचार्य के भाष्य का खण्डन कर दिया।

आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द जी सरस्वती और शूद्र-

आर्यसमाज कोई सम्प्रदाय, मजहब या मत नहीं है यह एक संस्था है, जिसका उद्देश्य हिन्दू-समाज में प्रविष्ट सभी कुरीतियों का मूलोच्छेद करना और वैदिकधर्म का प्रचार करना है।

महर्षि दयानन्द जी लिखते हैं-'वेद पढ़ने-सुनने का अधिकार सब को है। देखो गार्गी आदि स्त्रियाँ और छान्दोग्य में जनश्रुति शूद्र ने भी वेद रैक्यमुनि के पास पढ़ा था और यजुर्वेद के २६वें अध्याय के दूसरे मंत्र में स्पष्ट लिखा है कि वेदों के पढ़ने और सुनने का अधिकार मनुष्यमात्र को है।"

"यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः।
ब्रह्मराजन्याभ्याम् शूद्राय चार्य्याय च स्वाय चारणाय।"

(यजु० २६,२)

महर्षि दयानन्द जी कृत भाष्यम्-

"अस्याभिप्रायः-परमेश्वरः सर्वमानुष्यैर्वेदाः पठनीयाः पाठचा इत्याज्ञां ददाति। तद्यथा-(यथा) येन प्रकारेण (इमाम्) प्रत्यक्षभूतामृग्वेदादिवेदचतुष्टयीं (कल्याणीम्) कल्याणसाधिकां (वाचम्) वाणीं (जनेभ्यः) सर्वेभ्यो मनुष्येभ्योऽर्थात् सकलजीवोपकाराय (आवदानि) आसमन्ताद् उपदिशानि, तथैव सर्वैर्विद्वद्भिः सर्वमनुष्येभ्यो वेदचतुष्टयी वागुपदेष्टव्येति।

अत्र कश्चिदेवं ब्रूयात्-जनेभ्यो द्विजेभ्य इत्यध्याहार्य्यं, वेदाध्ययनाध्यापने तेषामेवाधिकारत्वात्।

नैव शक्यम्-उत्तरमन्त्रभागार्थ-विरोधात्। तद्यथा-कस्य-कस्य वेदाध्ययनश्रवणेऽधिकारोऽस्तीत्याकांक्षायामिदमुच्यते।

(ब्रह्मराजन्याभ्याम्) ब्राह्मणक्षत्रियाभ्यां, (अर्य्याय) वैश्याय (शूद्राय), (चारणाय) अतिशूद्रायान्त्यजाय, (स्वाय) स्वात्मीयाय पुत्राय भृत्याय च, सर्वेः सैषा वेदचतुष्टयी श्राव्येति। (प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह०) यथाहमीश्वरः पक्षपातं विहाय सर्वोपकारकरणेन सह वर्त्तमानः सन्, देवानां विदुषां प्रियः। दातुर्दक्षिणायै सर्वस्वदानाय प्रियश्च भूयासं स्याम्, तथैव भवद्भिः सर्वैर्विद्वद्भिरपि सर्वोपकारं सर्व-प्रियाचरणं मत्वा सर्वेभ्यो वेदवाणी श्राव्येति। यथायं (मे) मम कामः समृध्यते, तथैवैवं कुर्वताम् (अयं कामः समृध्यताम्) इयमिष्टसुखेच्छा समृध्यतां सम्यग् वर्धताम्। यशादः सर्वमिष्टसुखं मामुपनमति, (उप मादो नमतु) तथैव भवतोऽपि सर्वमिष्टसुखमुपनमतु सम्यक् प्राप्नोत्विति। मया युष्मभ्यमयमाशीर्वादो दीयत इति निश्चेतव्यम्। यथा मया वेदविद्या सर्वार्था प्रकाशिता, तथैव युष्माभिरपि सर्वार्थोपकर्त्तव्या। नात्र वैषम्यं किञ्चित् कर्त्तव्यमिति। कुतः? यथा मम सर्वप्रियार्था पक्षपातरहिता च प्रवृत्तिरस्ति, तथैव युष्माभिराचरणे कृते मम प्रसन्नता भवति, नान्यथेति। अस्य मन्त्रस्यायमेवार्थोऽस्ति। कुतः? 'बृहस्पते अति यदर्थः' इत्युत्तरस्मिन् मन्त्रेहीश्वरार्थस्यैव प्रतिपादनात्।"

अर्थात्-"(यथेमां वाचं कल्याणीं०) इस मन्त्र का अभिप्राय यह है कि वेदों के पढ़ने-पढ़ाने का सब मनुष्यों को अधिकार है, और विद्वानों को उनके पढ़ाने का। इसलिए ईश्वर आज्ञा देता है कि-हे मनुष्य लोगो! जिस प्रकार मैं तुमको चारों वेदों का उपदेश करता हूँ, उसी प्रकार से तुम भी उनको पढ़ के सब मनुष्यों को पढ़ाया और सुनाया करो। क्योंकि यह चारों वेद रूप वाणी सब की कल्याण करने वाली है तथा (आवदानि जनेभ्यः) जैसे सब मनुष्यों के लिए मैं वेदों का उपदेश करता हूँ, वैसे ही सदा तुम भी किया करो।

प्रश्न-"जनेभ्यः" इस पद से द्विजों ही का ग्रहण करना चाहिए, क्योंकि जहाँ कहीं सूत्र और स्मृतियों में पढ़ने का अधिकार लिखा है, वहाँ केवल द्विजों ही का ग्रहण किया है?

उत्तर-यह बात ठीक नहीं है, क्योंकि जो ईश्वर का भी अभिप्राय द्विजों ही के ग्रहण करने का होता, तो मनुष्यमात्र को उनके पढ़ने का अधिकार कभी न देता जैसा कि इस मंत्र में प्रत्यक्ष विधान है-

(ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्य्याय च स्वाय (चारणाय) अर्थात् वेदाधिकार जैसा ब्राह्मण वर्ण के लिए है, वैसा ही क्षत्रिय, अर्य्य=वैश्य, शूद्र, पुत्र, भृत्य और अतिशूद्र के लिए भी बराबर है-क्योंकि वेद ईश्वरप्रकाशित है। जो विद्या का पुस्तक होता है, वह सब का हितकारक है, और ईश्वररचित पदार्थों के दायभागी सब मनुष्य अवश्य होते हैं। इसलिए उसका जानना सब मनुष्यों को उचित है, क्योंकि वह माल सब के पिता का सब पुत्रों के लिए है, किसी वर्ण विशेष के लिए नहीं।..." महर्षि दयानन्द जी के इस उपर्युक्त भाष्य का समर्थन तथा उसी प्रकार का भाष्य अनेक आर्य विद्वानों ने भी किया है। चतुर्वेदभाष्यकार पं जयदेव शर्मा 'विद्यालङ्कार' मीमांसातीर्थ; पं. श्रीपाद दामोदर सातवलेकर; शास्त्रार्थ-महारथी पं. जे. पी. चौधरी जी काव्यतीर्थ; पं. मनसाराम जी 'वैदिकतोप'; स्वामी नित्यानन्द जी महाराज व स्वामी विश्वेश्वरानन्द जी महाराज; पं. भूमित्र शर्मा आर्योपदेशक; पं. शिवशङ्कर शर्मा 'काव्यतीर्थ'; श्री ओम् प्रकाश त्यागी, मंत्री सार्वदेशिक सभा; पं. धर्मदेव जी 'विद्यामार्तण्ड'; डा. निरूपण 'विद्यलङ्कर' एम. ए., पी-एच-डी.'।

पौराणिक पण्डितों में श्री उव्वट, महीधर, पं. ज्वालाप्रसाद मिश्र, पं. दीनानाथ शास्त्री ने यजु. (२६,२) के जो अर्थ किए हैं वे अशुद्ध तथा भ्रमपूर्ण हैं। बहुत से उदार पौराणिक विद्वानों ने भी महर्षि दयानन्द जी के भाष्य का समर्थन किया है। यथा-

(क) परलोकवासी पं. सत्यव्रत जी सामश्रमी, कलकत्ता-जो आर्यसमाजी नहीं थे, उन्होंने "ऐतरेयालोचनम्" नामक संस्कृत में एक पुस्तक लिखी है। यह 'ऐतरेय-ब्राह्मण' की विस्तृत भूमिका है। इस ब्राह्मण का रचयिता महीदास नामक दासीपुत्र शूद्र था। जब शूद्रों को वेदाध्ययन का अधिकार ही नहीं, तो महीदास ने 'ऐतरेय-ब्राह्मण' का निर्माण कैसे किया? इस प्रश्न को उठा कर आचार्य पं. सत्यव्रत जी सामश्रमी ने उत्तर दिया है कि 'शूद्र' ब्राह्मणग्रन्थ की रचना कर सकता है या नहीं यह तो साधारण बात है। हम तो ब्राह्मणग्रन्थों में यहाँ तक पाते हैं कि शूद्र मंत्र-द्रष्टा तक हुए हैं।

"नन्वेवमार्याणामार्यत्वप्रतिपादकधर्माणां यागादीनां विधायको ब्राह्मणग्रन्थस्तस्य प्रवचनं कर्तृत्वं कथमनार्ये तत्र दासीपुत्रे सम्भवेन्नामेति चेत् अत्र ब्रूमः। यागादिविधायक-ब्राह्मणग्रन्थस्य प्रोक्तृत्वं तुकिं तुच्छम्, मन्त्रद्रष्टृत्वमपि ज्ञायते दासीपुत्रस्यापि तद्यथा श्रुतं तावत्रैव कवषमैलूषोपाख्यानम्।'

(क्रमशः)

वेदों में गणतन्त्रात्मक शासन

ले.-शिवरानारायण उपाध्याय, 73 शास्त्री नगर दादाबाड़ी, कोटा

वेदों का लक्ष्य मानव जीवन का सर्वाङ्गीण विकास करना है। इसका अर्थ यह है कि मनुष्य अपने सांसारिक जीवन में सम्पूर्ण ऐश्वर्य का स्वामी बनकर सुख शांति पूर्वक जीवन व्यतीत करता हुआ मोक्ष की प्राप्ति करने में सफलता प्राप्त कर सके। धर्म की परिभाषा करते हुए वैशेषिक दर्शन का कथन है, **'यतोऽभ्युदय निश्रेयस सिद्धि स धर्मः'**। वेद इस धारणा के अनुकूल उस मार्ग का निर्देशन करता है जिस पर चल कर सांसारिक उन्नति के साथ-साथ मोक्ष की प्राप्ति भी की जा सके। इसके लिए समाज में शांति एवं व्यवस्था की महती आवश्यकता होती है। शांति और व्यवस्था स्थापित करना राज्य का मुख्य कर्त्तव्य होता है। राज्य के द्वारा ही खेती, बाड़ी, धन, धान्य आदि सब पदार्थों की रक्षा पूर्वक उत्पत्ति और न्यायपूर्वक विभाजन संभव है। कपटी, अधर्मी, कंजूस, हिंसक, दुष्ट मनुष्यों से सामान्य नागरिकों की रक्षा करना राज्य के द्वारा ही संभव है। इसीलिए वेद में राज्य की स्थापना को स्थान दिया गया है। वेद में प्रजातंत्र शासन व्यवस्था को ही स्वीकार किया गया है। जैसा कि अब्राहम लिंकन ने प्रजातंत्र शासन की परिभाषा करते हुए कहा है, 'अपने लिए राज्य, अपने द्वारा चुने गए व्यक्तियों द्वारा राज्य और अपने में से चुने गए व्यक्तियों द्वारा राज्य स्वराज्य है।' ऋग्वेद ने भी इसी प्रकार के राज्य की व्यवस्था की है। ऋग्वेद मण्डल 1 के सूक्त अस्सी में कुल सत्रह ऋचाएं हैं। प्रत्येक ऋचा के अंत में **'अर्चन्नु स्वराज्यम्'** शब्द आया है। इसका अर्थ है कि मनुष्य स्वराज्य की स्थापना के बाद उसकी रक्षा के लिए उसका पुजारी बने। इन ऋचाओं में स्वराज्य के विकास तथा उसकी रक्षा के साधनों को जुटाने का निर्देश हुआ है। बाह्य शत्रुओं से स्वराज्य की रक्षा के लिए नभ, जल तथा स्थल को सदैव सभी रक्षा साधनों तथा अस्त्र-शस्त्रों से पूर्ण रूप से तैयार रखना चाहिए। सेना के पास आधुनिकतम शस्त्रास्त्रों की विपुलता रहनी चाहिए। शासक को राज्य की सीमा से जुड़े राज्यों की सामरिक शक्ति तथा गतिविधियों का पूरा ज्ञान होना चाहिए। अपनी सामरिक शक्ति पड़ोसी राज्यों से लगभग दोगुनी होनी चाहिए। प्रजा के कल्याण के लिए शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं पर पर्याप्त ध्यान देकर उनका निरन्तर विकास करते रहना चाहिए। शासन का ध्यान प्रजा में आर्थिक साधनों के उचित वितरण भी रहना चाहिए। धनी व्यक्ति और सामान्य नागरिक के मध्य धन का अनुपात, 10:1 रहना चाहिए। धन का एक हाथ में संग्रह होना देश में निर्धनता बढ़ाता है जिससे वर्ग भेद उत्पन्न होता है और प्रजा में असन्तोष व्याप्त हो जाता है।

शासन की सम्पूर्ण शक्ति एक व्यक्ति के हाथ में कभी नहीं होनी चाहिए इससे निरंकुश शासक की उत्पत्ति होती है। इसीलिए वेद में कहा गया है, 'त्रीणि राजाना विदथे पुराणि परि विश्वानि भूषथः सदांसि।। ऋ. 3.38.6 अर्थात् राजा और प्रजा मिलकर सुख प्राप्ति के लिए तीन सभा विद्यार्य सभा, राजार्य सभा तथा धर्मार्य सभा स्थापित करें। अधिकारों का विकेन्द्रीयकरण होवे। शासन की ईकाई ग्राम होवे जिसकी व्यवस्था ग्रामणी करे। ग्रामणी गांव के लोगों के द्वारा चुना जावे। एक ग्राम में एक प्रधान पुरूष को रक्खें, उन्हीं दश ग्रामों पर दूसरा, बीस ग्रामों पर तीसरा, सौ ग्रामों पर चौथा और सहस्त्र ग्रामों पर पांचवां प्रधान अधिकारी रखे। इन प्रधान पुरूषों द्वारा राजा को ग्रामों की दशा ज्ञात होती रहे।'

यजुर्वेद अध्याय 10 के मंत्र संख्या 2, 3 व 4 में उल्लेख है कि राजा का चुनाव होता है। इन मंत्रों के अध्ययन से विदित होता है कि वेदों में गणतंत्रात्मक शासन का समर्थन किया गया है। इस पद्धति में देश के सर्वोच्च शासक को गुण, कर्म और स्वभाव के आधार पर जनता द्वारा चुना जाता है। जनता द्वारा चुने जाने वाला व्यक्ति ही गणपति कहलाता है। यजुर्वेद अध्याय 10 मंत्र संख्या 2 में कहा गया है-**'वृष्णंऽउर्मिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रं मे देहि।'** हे राजन्। आप राज्य के लिए शासक चुनने वाले हैं। कृपया सत्यनीति से यह राज्य मुझे दीजिए। इस मंत्र में राष्ट्राध्यक्ष के चुनाव में लड़ने वाला उम्मीदवार वर्तमान शासक से उसके पक्ष में मतदान करने की प्रार्थना कर रहा है। आगे के दो मंत्रों में कहा गया है कि राष्ट्राध्यक्ष के लिए जिन गुणों की आवश्यकता होती है वे गुण मुझमें धारित हैं।

राष्ट्राध्यक्ष के चुनाव में सम्पूर्ण बालिग जनता सम्मिलित होती है।

'त्वामग्ने वृणते ब्राह्मणा इमे शिवो अग्ने संवरणे भवानः'।। अथर्व. 2.6.3

हे तेजस्वी राजन्! हमारे चुनाव में तू मंगलकारी हो।

इस मंत्र से तो ज्ञात होता है कि केवल विद्वान् लोग ही मताधिकारी होते है परन्तु ऐसा नहीं है निम्न मंत्र इसको स्पष्ट कर देता है-

'पथ्या रेवतीर्बहुधा विरूपाः सर्वाः संगत्य वरायते अक्रन्'।। अथर्व. 3.4.7

साधारण मार्ग में पैदल चलने वाली अर्थात् निर्धन, धनवाली, विविध आकार सुन्दर व असुन्दर रूप वाली, अलग-अलग स्वभाव वाली सम्पूर्ण प्रजा ने एक मत होकर तेरे लिए यह श्रेष्ठ पद प्रदान किया है। राष्ट्राध्यक्ष के पद देश के किसी भी भाग में रहने वाला कोई भी बालिग व्यक्ति अपने को उम्मीदवार के रूप में प्रस्तुत कर सकता है।

आ प्र द्रव परमस्याः शिवे ते द्यावा पृथिवी उभे स्ताम्।
तदयं राजा वरूणास्तथाह स्वत्वायमह्वत् स उपदमेहि।। अथर्व. 3.4.5

अत्यन्त दूर प्रदेश से आकर पधार। तेरे लिए सूर्य और पृथ्वी मंगलकारी होवे। परमेश्वर कहता है, 'यह राजा सर्वश्रेष्ठ है, इसलिए तू आकर आदर पूर्वक इस राज्य को प्राप्त कर। प्रजा द्वारा चुने गए इस शासक को प्रजा कैसा मानती है और उसे क्या अधिकार प्राप्त होते हैं इस विषय पर कहा गया है-

गणानां त्वा गणपति हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियापतिः हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिः हवामहे वसो मम। अहम जानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्।। यजु. 23.19

जो गणपति अर्थात् गणनीय पदार्थों का स्वामी और प्रजा का पालन करने वाला है उसको हम लोग आदर पूर्वक आमंत्रित करते हैं। जो हमारे इष्ट मित्र आदि का पालन करने वाला गणपति है हम उसको ग्रहण करते हैं। जो राज्य की निधियों का स्वामी है उसको हम आदर पूर्वक आमंत्रित करते हैं। मैं ऐसे गुणवान शासक को जानूं। जो सम्पूर्ण प्रजा को गर्भस्थ शिशु की तरह पाल रहा है मैं उसे बुलाता हूँ। राज्य में स्थित सभी भूमि और खानों का स्वामी भी राष्ट्राध्यक्ष को ही माना जाता है। जमीन, खान आदि उसी के नाम पर उचित अधिकारी बेचते हैं। इस बात को निम्न मंत्र व्यक्त कर रहा है।

इन्द्रोः राजा जगतश्चर्षणी- नामधि क्षमा विश्व रूपं पदस्य।
ततो ददाति दाशुरे वसूनि चोदद्राध उपस्तुतं चिदर्वाक्।
साम. पूर्वार्चिक अ. 6 प्रथम दशति 2

प्रजा पालक राजा जंगम पशु आदि तथा मनुष्यों का स्वामी है। जो कुछ सब प्रकार का धन है वह इस राजा का है। वह उसे अपने धन में से दानादि करने वाले पुरूष के लिए धन देता है और हमारे सामने के मनोवांछित धन को प्रेरणा करता है।

शासक के अन्दर क्या-क्या गुण होना चाहिए इसको एक चित्रकार के हाथी के सिर वाली, लम्बोदर, मूषक पर सवार मूर्ति के द्वारा समझाने का सफल प्रयास किया है।

सभी प्राणियों में हाथी को सबसे अधिक बुद्धिमान माना जाता है उसका सिर सभी प्राणियों के सिरों से बड़ा होता है। बड़ा सिर बुद्धिमत्ता का द्योतक होता है। एक कहावत भी है 'बड़ा सिर सरदार का बड़े पैर मूर्ख के' राष्ट्राध्यक्ष को सबसे अधिक बुद्धिमान होना चाहिए इसलिए उसके लिए सबसे बड़े सिर रखने की बात कही गई है। नाक व्यक्ति के सम्मान का प्रतीक मानी जाती है। व्यक्ति के अपमानित होने पर कहा जाता है कि उसकी नाक कट गई। जो व्यक्ति अपने सम्मान का ध्यान रखता है कि वह नाक पर मक्खी नहीं बैठने देता है। राष्ट्रपति का सम्मान राष्ट्र का सम्मान है इसलिए उसकी नाक हाथी की सूंड की तरह लम्बी है। हाथी के कान सबसे लम्बे होते हैं उसे राज्य के हर व्यक्ति की समस्या को सुनना है और हल भी करना है इसलिए उसके कान भी लम्बे है। राष्ट्राध्यक्ष का उदर भी लम्बा है। जैसे माता गर्भस्थ शिशु का पालन अपने उदर में करती है ऐसे ही राष्ट्राध्यक्ष सम्पूर्ण प्रजा को गर्भस्थ शिशु की तरह पालन करें। साथ ही क्रोध कभी न करें, मन्यु से काम लें गम खावे। मूसक की सवारी का अर्थ राष्ट्र की जड़ खोदने वाले राष्ट्रद्रोही लोगों पर नियंत्रण रखें। औरंगजेब की दृष्टि में शिवाजी पहाड़ी चूहा था। वास्तव में शिवाजी महाराज ने उसके राज्य की जड़ काट डाली। वह 25 वर्ष तक दक्षिण भारत में रहा परन्तु अपने साम्राज्य की रक्षा नहीं कर सका।

मृत्यु का स्वरूप

ले.-पं. उम्मेद सिंह विशारद, देहरादून

संसार में सम्पूर्ण प्राणी मृत्यु के भय से ग्रसित हैं, और प्रत्येक क्षण मृत्यु से बचने का प्रयत्न करते रहते हैं। यह सभी जानते व मानते है कि एक दिन मेरी मृत्यु होगी, किन्तु उस सत्य को स्वीकार करने में उपेक्षा करते है।

हम समझते है कि जीवन और मृत्यु दो स्वतन्त्र सत्ताएँ है एक तरफ जीवन खड़ा है दूसरी तरफ मृत्यु खड़ी है, परन्तु ऐसा नहीं हैं यर्थात् सत्ता जीवन की है, मृत्यु आगामी जीवन में प्रवेश करने का द्वार है। जीवन में मृत्यु और मृत्यु में जीवन घुला मिला है। जीना और मरना जोड़ा है और सदा साथ रहता है। मृत्यु के अभाव का नाम जीवन नहीं है क्योंकि मृत्यु के बिना जीवन रह सकता है। मृत्यु का भय तभी तक रहता है जब तक मृत्यु का साक्षात्कार नहीं हो जाता। जब मनुष्य मृत्यु के रहस्य को समझ जाता है तब मृत्यु का भय जाता रहता है। और उसके जीवन का दृष्टिकोण ही बदल जाता है।

रूपान्तरण का ही दूसरा नाम 'मृत्यु' है

संसार में किसी वस्तु का नाश नहीं होता, उसका रूप बदल जाता है। विज्ञान का अटल नियम है कोई वस्तु नष्ट नहीं होती, रूपान्तरित हो जाती है। हम शरीर के नष्ट होने को मृत्यु कहते है, किन्तु शरीर के तत्वों का रूपान्तरित हो जाना है। शरीर पांच तत्वों से बना है, पृथ्वी तत्व पृथ्वी में, जलीय तत्व जल में, आग्नेय तत्व अग्नि में, वायवीव तत्व वायु में चला जाता है, आकाश तत्व आकाश में चला जाता है। शरीर तो परमाणुओं के संयोग से बना है, इसलिए मृत्यु समय परमाणुओं का संयोग जाता रहता है, परमाणु नष्ट नहीं होते और चेतना परमाणुओं के संयोग से नहीं बनी। मृत्यु के समय चेतना आत्मा का होता हैं जैसे शरीर का रूपान्तरण होता है वैसे आत्मा का रूपान्तरण होता है, एक शरीर छोड़ कर दूसरा शरीर धारण कर लेता है। शरीर के रूपान्तरण को मृत्यु कहते है और आत्मा के रूपान्तरण को पुनर्जन्म कहा जाता है। आत्मा का नाश नहीं होता, आत्मा सिर्फ शरीर बदलता है। मानो पुराने चोले को उतार कर नया चोला धारण कर लेता है। वास्तव में आत्मा के लिए मृत्यु की कोई सत्ता नहीं है, आत्मा के लिए मृत्यु आयथार्थ है।

मृत्यु का स्वरूप

जो जन्म लेता है वह अवश्य मरता है, परन्तु यह किसी को पता नहीं है कि मृत्यु क्या हैं हमारा सम्पूर्ण जीवन मृत्यु को सत्य मान कर बना हुआ है और मृत्यु का भय हमारे सभी कार्यों में सन्निहित है। हम खाते है, पानी पीते है, परिवार बनाते है कि हमें कौन सम्भालेगा, हम जीवन का हर कार्य मृत्यु से बचने के लिये करते है। किसी ने सत्य ही कहा है कि यह आश्चर्य की बात नहीं है कि मनुष्य जिन्दा है, आश्चर्य तो इस बात का है कि पग-पग पर मृत्यु का शिकंजा होने पर भी कैसे जी रहा है। हम कहते है बालक ने जन्म ले लिया हैं किन्तु हम भौतिक चका-चौंध में भूल जाते है कि जन्म लेते ही वह मृत्यु की तरफ कदम बढ़ाने लगता है। वैदिक विचारधारा का कहना है कि मृत्यु का अस्तित्व ही नहीं है यह एक मिथ्या विचार है, इसके वास्तविक स्वरूप समझ लेने से मृत्यु स्वयं मिट जाती हे, क्योंकि मृत्यु शरीर की होती है आत्मा की नहीं होती। आत्मा की शरीर में भिन्न स्वतन्त्र सत्ता हैं जन्म शरीर का होता है तो मृत्यु भी शरीर की होती है। आत्मा शरीर को सिर्फ धारण करता हैं शरीर का मरण जन्म से ही शुरू हो जाता है, परन्तु शरीर के मरण के पीछे एक सत्ता बनी रहती है जो इन मरती हुई कोशिकाओं में एक सूत्रता बनाए रखती है। शरीर मरता है, आत्मा नहीं मरती, शरीर बूढ़ा व रोगी होता है आत्मा बूढ़ा व रोगी नहीं होता।

शरीर की मृत्यु प्रतिक्षण होती रहती है

हमारा शरीर कोशिकाओं से बना हुआ है, कोशिकाएं हर समय टूटती व बनती रहती है। बाल है नख है ये सब शरीर के मृत भाग ही तो है। शरीर के परमाणु बदलते बदलते सात साल में सारा शरीर बदल जाता है। हमारा सम्पूर्ण जीवन में शरीर नौ या दस बार बदल चुका होता हैं मृत्यु के अन्तिम क्षण में नई कोशिकायें बनना सर्वथा बन्द हो जाती है, पुरानी सब टूट जाती है और नई बनती नहीं इसी को हम मृत्यु कहते हैं लोग कहते है कि शरीर नष्ट होने के साथ वह चेतन शक्ति भी नष्ट हो जाती है, यह एक अनहोनी बात है। हर वस्तु किसी लक्ष्य की पूर्ति के लिये पैदा हुई है और उस लक्ष्य की पूर्ति के लिये क्रियाशील है। शरीर छूट जाए तो आत्मा दूसरे शरीर का निर्माण कर लेता है-मृत्यु शरीर की होती है आत्मा की नहीं रूपान्तरण होता है।

वास्तविक सत्ता जीवन की है-मृत्यु अयथार्थ है

मृत्यु एक भ्रम है कभी-कभी जो होता ही नहीं वह प्रचलित हो जाता है। भूत से सब डरते है परन्तु भूत क्या है अगर भूत से डरने वाला जान जाये कि भूत एक भ्रम है तो क्या वह भूत से डरेगा। क्योंकि भूत की कोई सत्ता नहीं है हम उसकी कल्पना कर लेते है। तभी उससे डर लगता हैं मृत्यु का स्वरूप भी ऐसा ही हैं आत्मा के लिये मृत्यु है ही नहीं उसकी कोई सत्ता नहीं हैं मृत्यु छाया के समान है। जैसे भूत का कोई अस्तित्व नहीं है वैसे छाया का भी नहीं है। छाया की स्वतन्त्र सत्ता नहीं है, प्रकाश के रूक जाने का नाम छाया हैं। छाया प्राणी का पीछा करती है, मृत्यु से भय खाना छाया से डर जाने के समान है। मृत्यु अन्धेरा है, अन्धेरे की स्वतन्त्रत सत्ता नहीं है। स्वतन्त्र सत्ता प्रकाश की है। जैसे कारखाने में बैटरी खत्म होने के बाद मालिक नई बैटरी ले लेता है, और कारीगर का काम नहीं रूकता है कारीगर नई बैटरी से काम लेने लगता है। इसी प्रकाश आत्मा पुराने शरीर को छोड़कर जब नये शरीर में आता है तब बच्चे का शरीर ग्रहण करता है जो नई बैटरी की तरह शक्ति से भरपूर और तरोताजा होता है।

शरीर का मालिक आत्मा है

जो पदार्थ व वस्तु अपने लिये नहीं है दूसरो के भोग के लिये बनी है। जैसे मकान अपने लिये नहीं होता, मालिक मकान के लिये होता है इसी प्रकार कपड़ा अपने लिये नहीं शरीर के लिये, "शरीर भी एक पदार्थ है, यह भी आत्मा के लिये है शरीर में कोई सत्ता है जो उसका उपयोग करती है" वह सत्ता अदृश्य है। अत: हम इस परिणाम पर पहुंच जाते है कि शरीर का मालिक कोई अशरीरी अदृश्य सत्ता है।

मृत्यु के समय स्थिति

मृत्यु के समय आत्मा इन्द्रियों को अन्दर खीच लेती है। सभी इन्द्रिंया अपना कार्य बन्द कर देती है। उस समय हृदय के अग्र प्रदेश में हितानाम की नाडियां हृदय से ऊपर उठ जाती है और हृदय का अग्र भाग आत्मा की ज्योति से प्रकाशित हो जाता है, और इसी ज्योति के साथ आत्मा चक्षु से मूर्धा से या शरीर के किसी अन्य प्रदेश से निष्क्रमण कर देता है और इन्द्रिंया भी पीछे-पीछे निकलने लगती है। जीव मरते समय सविज्ञान ही जाता है जीवन के सारे खेल इसके सामने आ जाते है और विध्या पूर्व प्रजा भी साथ ले जाते हैं जैसे तृण जलाशुण्डी तिनके के अन्त पर पहुंच कर दूसरे तिनके के सहारे को पकड़ कर अपनी ओर खींच लेता है। इसी प्रकार आत्मा भी इस शरीर को छोड़ कर दूसरे शरीर में प्रविष्ट हो जाती है। और वाणी अग्नि में प्राण वायु में चक्षु आदित्य में, मन चन्द्रमा में श्रोत्र दिशाओं में शरीर पृथ्वी में शरीवर्ती आकाश ब्रह्ममान्ड में लोभ ओषधी में केश वनस्पतियों में शोषित और रेत जल में लीन हो जाते है। कार्य अपने कारण में और पिन्ड ब्रह्ममान्ड में चल देता है। जीव का आधार केवल कर्म ही बचने है और वह कर्मानुसार जन्म लेता है। नोट: कुछ सारांश इस लेख में वैदिक विचारधारा का वैज्ञानिक आधार (डा. सत्यकेतु विद्धालंकार से भी लिया गया है।

स्वामी गंगागिरी जनता गर्ल्ज कालेज रायकोट में हवन यज्ञ का आयोजन

स्वामी गंगागिरी जनता गर्ल्ज कालेज रायकोट के प्रांगण में गत दिनों श्री अर्जुन देव शास्त्री जी के सुयोग्य निर्देशन में हवन यज्ञ समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कालेज प्रबन्धकीय कमेटी के प्रधान श्री रमेश कौड़ा जी एवं महासचिव श्री राजेन्द्र कौड़ा की पावन यज्ञ में आहूतियां प्रदान करते हुये।

गुरुकुल की पावन तपोभूमि पर निर्मित स्वामी गंगागिरी जनता गर्ल्ज कालेज रायकोट के प्रांगण में गत दिनों श्री अर्जुन देव शास्त्री जी के सुयोग्य निर्देशन में हवन यज्ञ समारोह का आयोजन किया गया। वेद के पावन मंत्रों के उच्चारण के साथ यज्ञकुंड में ज्योति प्रज्ज्वलित करके छात्रों के लिये विभिन्न परीक्षाओं में सर्वश्रेष्ठ परिणाम पास करने की कामना की गई। इस अवसर पर कालेज प्रबन्धकीय कमेटी के प्रधान श्री रमेश कौड़ा जी, जनरल सैक्रेटरी श्री राजेन्द्र कौड़ा जी, सदस्य श्री परविन्दर गोयल, प्रिंसीपल श्रीमती शिल्पा गोयल जी, छीनीवाल कलां, सरकारी सीनियर सैकेंडरी स्कूल की प्रिंसीपल श्रीमती गुरमीत कौर जी, एस.डी.आई स्कूल रायकोट की अध्यापिकाएं मैडम जसवीर कौर जी, स.भजन प्रीतसिंह, एवं स. जसमीत सिंह, समूह स्टाफ, छात्र एवं इलाके के गणमान्य सज्जन विशेष रूप से उपस्थित थे। हवन कुंड से उठती हुई सुगन्धि से सारा वातावरण सुगन्धिमय एवं पावन बन गया जिससे सब के मन में एक पावन एवं सकारात्मक ऊर्जा का संचार हुआ। हवन के पश्चात छात्राओं ने भजन गायन करके वातावरण को और भी आध्यात्मिक रूप प्रदान कर दिया। अंत में स्वामी गंगागिरी जनता गर्ल्ज कालेज रायकोट की प्रिंसीपल जी ने पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ की एम.ए. राजनीति शास्त्र की परीक्षा में पोजीशन प्राप्त करने वाली छात्राओं अमनप्रीत कौर, मंदीप कौर, गगनप्रीत कौर, कम्प्यूटर साईंस विभाग की हरजीत कौर, दिलप्रीत कौर, हरप्रीत कौर एवं खेलकूद विभाग की नैशनल कराटे चैम्पियनशिप में स्वर्ण पदक, रजत पदक प्राप्त करने वाली छात्राओं क्रमश: प्रियंका टंडन, आर्शदीप कौर, वीरपाल कौर, नवजीत कौर, इंटर स्टेट कराटे चैम्पियनशिप में स्वर्ण पदक, रजत पदक एवं कांस्य पदक प्राप्त करने वाली छात्राओं क्रमश: अर्शदीप कौर, प्रियंका टंडन, रमनदीप कैर, मनप्रीत कौर, सिमरन एवं स्मृद्धि रानी को बधाई देते हुये कालेज के श्रेष्ठ परिणामों खेल कूद के क्षेत्र में प्राप्त उपलब्धियों तथा यूथ फेस्टिबल में प्राप्त हुई उपलब्धियों पर चर्चा की। तत्पश्चात कालेज प्रबन्धकीय कमेटी के प्रधान श्री रमेश कौड़ा जी ने छात्राओं को नारी शिक्षा तथा स्वामी दयानन्द जी द्वारा बताये गये मार्ग पर चलने हेतु प्रेरित करते हुये उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

राजेन्द्र कुमार कौड़ा
महासचिव

पृष्ठ 8 का शेष-आर्य समाज वेद मंदिर आर्य नगर ...

से विचलित न हो सके। आत्मविश्वास से युक्त बालक असम्भव से असम्भव कार्य को करने की क्षमता रखता है। कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री सरदारी लाल जी आर्य ने अपना अध्यक्षीय भाषण देते हुए कहा कि ऋषि दयानन्द के द्वारा बताए गए मार्ग पर चलकर ही सम्पूर्ण विश्व का कल्याण को सकता है। इसलिए हमें वैदिक सिद्धान्तों को अपने जीवन में अपनाते हुए अधिक से अधिक परिवारों को आर्य समाज के साथ जोड़ना है और उनके घरों में पारिवारिक सत्संग करने हैं। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के कोषाध्यक्ष श्री सुधीर शर्मा जी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए, उनके साथ श्री सुदेश कुमार जी सभा मंत्री, श्री रणजीत आर्य सभा मंत्री भी उपस्थित हुये। आर्य समाज के अधिकारियों द्वारा सभी अतिथियों को सम्मान चिह्न देकर सम्मानित किया गया। मंच का संचालन आर्य समाज के महामन्त्री श्री वेद आर्य ने किया। आर्य समाज के प्रधान श्री सतपाल जी ने सभी विद्वानों का धन्यवाद और आभार व्यक्त किया। इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिये आर्य समाज के कोषाध्यक्ष श्री अनिल आर्य जी, श्री राजेश कुमार, श्री कमल मोखा, श्री राज कुमार, पं. सरबजीत, श्री तरसेम लाल, श्री संतोख सिंह, पंडित हरिशंकर, ठेकेदार मुनी लाल, विशाल सिंह, अभिलाष का पूरा पूरा सहयोग प्राप्त हुआ। शान्तिपाठ के साथ कार्यक्रम को सम्पन्न किया गया। कार्यक्रम के पश्चात सभी ने ऋषि लंगर ग्रहण किया। **-वेद आर्य महामन्त्री, आर्य समाज आर्य नगर-जालन्धर**

परिणाम शत प्रतिशत रहा

दयानन्द पब्लिक स्कूल लुधियाना का दसवीं कक्षा का पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड द्वारा घोषित परिणाम शत प्रतिशत रहा। स्कूल के सभी छात्रों ने अच्छे अंक प्राप्त करके स्कूल का नाम रोशन किया। स्कूल में सर्वाधिक अंक दानवी अरोड़ा, ओम, पंकज शर्मा ने प्राप्त किए। स्कूल के प्रिंसीपल श्रीमती निर्मल कांता जी ने उसका श्रेय स्कूल प्रबंधकीय कमेटी और अनुभवी अध्यापकों को दिया। प्रिंसीपल मैडम ने अभिभावकों को भी इस शानदार सफलता की बधाई दी और अपने संदेश में कहा कि दयानन्द पब्लिक स्कूल का उद्देश्य बच्चों में अच्छे संस्कार पैदा करने के साथ-साथ उन्हें हर क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करना है।

दयानन्द केन्द्रीय विद्या मंदिर, बरनाला के विद्यार्थियों ने किया संस्था का नाम रोशन

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अगुवाई में सफलता के शिखर को छू रही संस्था दयानन्द केन्द्रीय विद्या मंदिर, बरनाला का मैट्रिक का नतीजा 100 प्रतिशत रहा। स्कूल डायरैक्टर अनीता मित्तल ने बताया कि दसवीं का नतीजा 100 प्रतिशत रहा। तनीषा ने 96.76 प्रतिशत नंबर लेकर पहला, स्नेहा तिवारी ने 96 प्रतिशत नंबर लेकर दूसरा तथा शायना कौर ने 93.23 प्रतिशत नंबर लेकर स्कूल में तीसरा स्थान प्राप्त किया। वंशिका 91.23 प्रतिशत नंबर लेकर चौथे तथा हिमांशु 90 प्रतिशत नंबर लेकर पाँचवे स्थान पर रहा। स्कूल कार्यकारिणी प्रिंसीपल ने सभी बच्चों को तथा अध्यापकों को बधाई दी।

आर्य गर्ल्ज़ सी० सै० स्कूल, बठिण्ड़ा दसवीं का नतीजा

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड द्वारा घोषित दसवीं परीक्षा परिणाम में आर्य गर्ल्ज़ सी० सै० स्कूल, बठिण्ड़ा के बच्चों का प्रदर्शन बढ़िया रहा। छात्रा प्रीती पुत्री श्री गणेश कुमार ने 92.46 प्रतिशत अंक प्राप्त करके प्रथम स्थान हासिल किया। दूसरे स्थान पर टीशा पुत्री श्री अनिल कुमार ने, 91.07 प्रतिशत अंक तथा अलीशा पुत्री श्री संजीव कुमार 91 प्रतिशत अंक प्राप्त करके तीसरा स्थान हासिल किया। स्कूल के प्रधान श्री अनिल अग्रवाल, उपप्रधान श्री सुरिन्द्र गर्ग, प्रिंसीपल श्रीमती सुषमा मेहता जी ने सभी स्टाफ तथा बच्चों को हार्दिक बधाई दी। बच्चों का मुँह मीठा करवाया गया तथा उन्हें इनाम देकर सम्मानित किया गया। प्रिंसीपल मैडम ने कक्षाध्यापिका श्रीमती रीटा जिंदल जी को बधाई दी उन्होंने कहा कि सभी अध्यापिकाओं और बच्चों की मेहनत से ही अच्छे अंक प्राप्त किए हैं। उन्होंने बच्चों को इसी तरह जिन्दगी में आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। दसवीं कक्षा को पढ़ाने वाले सभी अध्यापिकाओं को भी बधाई दी।

आर्य मर्यादा के ग्राहक महानुभावों की सेवा में

आर्य मर्यादा साप्ताहिक निरन्तर आपकी सेवा में पहुंच रही है। जिन आर्य मर्यादा के ग्राहकों ने अभी तक अपना वार्षिक शुल्क या पिछला शुल्क नहीं भेजा है उनसे विनम्र प्रार्थना है कि वह अपना वार्षिक शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। आर्य मर्यादा का वार्षिक शुल्क मात्र 100/- रुपये है और आजीवन सदस्यता शुल्क 1000/- रुपये है। इसलिये मेरी सभी ग्राहक महानुभावों से प्रार्थना है कि वह अपना शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। इसके साथ ही आर्य समाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से भी निवेदन है कि वह अधिक से अधिक आर्य मर्यादा के ग्राहक बनाने में सहयोग करें। आशा है आप का सहयोग हमें प्राप्त होगा।

-व्यवस्थापक आर्य मर्यादा

आर्य समाज वेद मंदिर आर्य नगर जालन्धर का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज वेद मदिर आर्य नगर जालन्धर के वार्षिक उत्सव के अवसर पर उपस्थित जनसमूह जबकि भजन प्रस्तुत करते हुये श्री जगत वर्मा जी। दूसरे चित्र में बाएं से दाएं आर्य समाज के महामंत्री श्री वेद आर्य जी, कोषाध्यक्ष श्री अनिल आर्य जी, वैदिक प्रवक्ता श्री महावीर मुमुक्षु जी, श्री सुरेन्द्र कुमार, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के वरिष्ठ उप प्रधान श्री सरदारी लाल जी आर्य रत्न, रजिस्ट्रार श्री अशोक परूथी जी एडवोकेट, सभा कोषाध्यक्ष श्री सुधीर शर्मा जी, आर्य समाज आर्य नगर के प्रधान श्री सतपाल आर्य जी।

आर्य समाज वेद मन्दिर आर्य नगर जालन्धर का वार्षिकोत्सव 1 मई 2019 से 5 मई 2019 रविवार तक मनाया गया। इस अवसर पर प्रतिदिन रात्रि 7:00 से 10:00 बजे तक हवन यज्ञ, भजन व प्रवचन होते रहे। 1 मई को श्री तरसेम लाल बैंक ऑफिसर 26 आर्य नगर जालन्धर, 2 मई को श्री मुनि लाल ठेकेदार आर्य नगर जालन्धर, 3 मई को श्री राज कुमार कृष्णा मैडीकल 24 आर्य नगर जालन्धर, 4 मई को श्री सतपाल प्रधान आर्य समाज आर्य नगर जालन्धर के परिवारों में सत्संग का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आर्य जगत के उच्चकोटि के विद्वान् आचार्य महावीर मुमुक्षु जी मुरादाबाद के प्रवचन तथा भजनोपदेशक श्री जगत वर्मा जी के सुमधुर भजन होते रहे।

मुख्य कार्यक्रम 5 मई दिन रविवार को प्रात: 8:00 से 10:00 बजे तक विश्व शान्ति महायज्ञ के साथ प्रारम्भ हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य महावीर जी मुमुक्षु जी ने सभी यजमानों को आशीर्वाद प्रदान किया। यज्ञ के पश्चात ध्वजारोहण श्री राजेश अमर प्रेमी जी के करकमलों द्वारा किया गया। ध्वजारोहण के पश्चात सभी आर्यजनों ने प्रात:राश ग्रहण किया। तत्पश्चात आर्य सम्मेलन आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के वरिष्ठ उपप्रधान श्री सरदारी लाल जी आर्य की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुआ। सर्वप्रथम श्री सुरेन्द्र आर्य, श्री राजेश प्रेमी ने बहुत सुन्दर भजन सुनाकर वातावरण को संगीतमय बना दिया। इस अवसर पर आर्य जगत के उच्चकोटि के विद्वान् आचार्य महावीर जी मुमुक्षु ने अपने विचार रखते हुए कहा कि आज समय बदल गया है। हमारे बच्चे वैदिक ग्रन्थों की जगह मोबाईल और इंटरनैट पर व्यस्त हैं। उन्होंने कहा कि आज की युवा पीढ़ी को आर्य समाज और वैदिक सिद्धान्तों के साथ जोड़ने की आवश्यकता है। बच्चों की गलतियों पर ध्यान देकर उन्हें दूर करना हर माता-पिता का कर्त्तव्य है। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के रजिस्ट्रार श्री अशोक परूथी जी ने भी अपने विचार रखे। उन्होंने कहा कि राष्ट्र की उन्नति के लिए नैतिक मूल्यों से युक्त चरित्रवान युवा पीढ़ी का होना अति आवश्यक है। युवा पीढ़ी किसी भी राष्ट्र की अमूल्य सम्पत्ति होती है। जो इस युवा पीढ़ी को बर्बाद कर देता है, नशे की दलदल में ढकेल देता है, वह राष्ट्र कभी भी उन्नति नहीं कर सकता। वर्तमान समय में युवा पीढी को नशे से बचाने की सबसे बड़ी आवश्यकता है। आज की युवा पीढ़ी को उसके कर्त्तव्य का बोध कराने वाला कोई नहीं है। स्कूल में भी इस प्रकार की शिक्षा नहीं मिल रही है जिससे विद्यार्थी के अन्दर अच्छे गुण विकसित हो, उसके अन्दर नैतिक मूल्यों की वृद्धि हो। आज की युवा पीढी को चरित्रवान बनाने के लिए माता-पिता और अध्यापकों को अपनी जिम्मेदारी को समझना होगा। किसी भी बालक के जीवन निर्माण में उसके माता-पिता और अध्यापकों की प्रमुख भूमिका रहती है। जो इस भूमिका को निभाते हैं, अपने कर्त्तव्य का वहन करते हैं, वे राष्ट्र की उन्नति और तरक्की में अपना योगदान देते हैं। इसलिए माता पिता और अध्यापकों का कर्त्तव्य है कि वे अपने-अपने कर्त्तव्यों को निभाते हुए बालक और बालिकाओं में ऐसी इच्छा शक्ति उत्पन्न करें, ऐसा आत्मविश्वास जागृत करें जिससे वे कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी अपने पथ से विचलित न हो सके। आत्मविश्वास से युक्त बालक असम्भव से असम्भव कार्य को करने की क्षमता रखता है। कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री सरदारी लाल जी आर्य ने अपना (शेष पृष्ठ सात पर)

डा. आसानन्द आर्य माडल सी.सै.स्कूल नवांशहर की छात्रा जिया नंदा ने जिला में पहला व राज्य में तीसरा स्थान हासिल किया

जिया नंदा

आंचल

दीक्षा सुधीर

राजविन्द्र कौर

जाह्नवी कुन्दरा

विकास नारायण

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.), गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर के तत्वावधान में नवांशहर में चल रही शिक्षण संस्था डा.आसानन्द आर्य माडल सीनियर सैकेंडरी स्कूल नवांशहर के छ: विद्यार्थियों ने पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड की दसवीं कक्षा के परीक्षा परिणामों में मेरिट लिस्ट में स्थान प्राप्त करके जिला नवांशहर का गौरव बढ़ाया है। जिला नवांशहर के नौ विद्यार्थियों ने मैरिट सूची में स्थान प्राप्त किया जिसमें से छ: विद्यार्थी डॉ. आसानन्द आर्य मॉडल सी. सै. स्कूल के हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) जालन्धर के यशस्वी प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी एवं सभा महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी, अशोक परूथी जी एडवोकेट रजिस्ट्रार जी ने भी छात्र एवं छात्राओं को उनकी इस उपलब्धि पर बहुत बहुत बधाई दी है। सभा की तरफ से प्रबन्ध समिति, प्रिंसीपल एवं स्कूल स्टॉफ को बधाई दी गई। प्रबन्धक समिति एवं अध्यापकों ने मेरिट में आने वाले विद्यार्थियों का मुंह मीठा करवा कर उज्जवल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दीं। डा. आसानन्द आर्य माडल सीनियर सैकेंडरी स्कूल की जिया नंदा ने 650 अंकों में से 644 अंक हासिल करके जिले में पहला व राज्य में तीसरा स्थान हासिल किया है। जिया अच्छी पढ़ाई करके डाक्टर बनना चाहती है तथा समाज व देश की सेवा करना चाहती है। इसी स्कूल की छात्रा आंचल ने 641 अंक हासिल करके जिला में दूसरा और राज्य में आठवां स्थान प्राप्त किया है। आंचल ने कहा कि वह सी.ए. बनना चाहती है। उसने कहा कि वह शुरू से ही कामर्स में रूचि रखती है। आंचल के पिता की राहों में एक दुकान है। इसके अलावा दीक्षा सुधीर ने जिले में 640 अंक हासिल कर तीसरा स्थान और राज्य में नौंवा स्थान हासिल किया है। दीक्षा से बात की गई तो उसने कहा कि वह आगे पढ़ कर सी.ए. बनना चाहती है। इसी प्रकार स्कूल की छात्रा जाहनवी कुन्दरा ने 636 अंक लेकर जिले में पांचवें एवं राज्य में 13वां स्थान हासिल किया है। दीक्षा सुधीर ने बताया कि वह पढ़ कर विदेश जाना चाहती है। इसी स्कूल की छात्रा राजविन्द्र ने 635 अंक लेकर जिला में 6वां एवं राज्य में 14 वां स्थान हासिल किया है। इसी स्कूल के होनहार छात्र विकास नारायण ने 634 अंक लेकर जिला में सातवां एवं राज्य में 15वां स्थान हासिल किया है।

प्रिंसीपल

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।